झारखंडी कला संस्कृति एवं साहित्य

प्रस्तावना

झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) की प्रारंभिक परीक्षा में मात्रा 8 दिन रह गए है आपने जो भी पढाई की है उसका एक बार रिविज़न कर ले | इसी क्रम में आज हम यहाँ पर झारखंडी कला संस्कृति व साहित्य पर चर्चा कर रहे है | और ये उम्मीद करते है की आपको परीक्षा में इससे कुछ सहायता मिलेगी |

चित्रकला

मुख्यतः तीन प्रकार की चित्रकला—

जादोपटिया चित्रकारी —

- कपड़ा या कागज के छोटे छोटे टुकड़ो को जोड़कर बनाए जाने वाले पट्टियों पर की जाने वाली चित्रकारी |
- मुख्यतः संथाल जनजाति में |

कोहबर चित्रकारी —

- गुफा में विवाहित जोड़ा दिखाने के लिए |
- सिकी देवी का विशेष चित्रण |
- बिरहोर जनजाति में |

सोहराय चित्रकारी —

- सोहराय पर्व से सम्बंधित , दिवाली के एक दिन बाद मनाया जाता है |
- पशुओं को श्रद्धा अर्पित करने का पर्व |
- देवता प्रजाति / पशुपति का विशेष चित्रण |

लोक गीत

कुछ प्रमुख लोक गीत व उसके गाने के अवसर —

गीत	गाने के अवसर
झूमर गीत	तीज, कर्मा, जितिया, सोहराय आदि त्योहार के अवसर पर
डोमकच	विवाह के अवसर पर स्त्रियों के द्वारा गाए जाने वाला गीत
अंगनाई गीत	स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाला गीत
झंझाइन गीत	जन्म संबंधी संस्कार के अवसर स्त्रियों द्वारा गाए आने वाला गीत
विवाह गीत	विवाह में गाएजाने वाला गीत
डईड़धरा गीत	वर्ष ऋतू में देव स्थानों में गाए जाने वाला गीत |

इसके अलावा भी बहुत सरे झारखण्ड के लोक गीत है पर 1 नंबर के लिए उतना कौन रट्टा मारता है और भी बहुत सारी चीजे है पढ़ने के लिए लोक गीत के अलावा |

झारखण्ड के नृत्य

छऊ नृत्य

- मुख्यतः सरायकेला , मयूरभंज व पुरुलिया जिले में |
- इस नृत्य का विदेश में सर्वप्रथम प्रदर्शन 1938 में सरायकेला के राजकुमार सुधेन्द्र नारायण सिंह ने करवाया था |
- इस नृत्य में पौराणिक व ऐतिहासिक कथाओं के मंचन के लिए पात्र तरह तरह के मुखौटे धारण करते है और बिना संवाद के अभिनय के द्वारा अपने भाव को व्यक्त करते है |

जदुर नृत्य

- यह नृत्य कोलोम सिंग बोंगा पर्व से सरहुल पर्व (फागुन से चैत तक) तक चलता है |यह स्त्री पुरुष का सामूहिक नृत्य है , जिसमे वे धीमी गति से लय ताल में नाचते हैं |

जपी/शिकार नृत्य

- यह नृत्य सरहुल पर्व के बाद आरम्भ होता हैं व आषाढ़ी पर्व तक चलता हैं

करमा / लहुसा नृत्य –

- यह नृत्य असाढ़ से सोहराय तक मनाया जाता हैं |यह एक सामूहिक नृत्य हैं | इसमें 8 पुरुष व 8 स्त्रियां भाग लेती हैं |

कुछ और प्रमुख नृत्य
माघानृत्य — शीत ऋतु में
पाइका नृत्य
जतरा नृत्य – समूहित नृत्य

झारखण्ड के प्रमुख लोक नाट्य

लोक नाट्य	विशेषताएँ
1. जट-जटिन	श्रावण कार्तिक महीने में अभिनीत इस लोक नाट्य में जट जटिन के वैवाहिक जीवन को दर्शाया जाता हैं।
2. भकुली बंका	इसे जट जटिन नाट्य के साथ प्रस्तुत किया जाता हैं। इस लोक नाट्य में भकुली (पत्नी) एवं बंका (पति) के वैवाहिक जीवन को दर्शाया जाता हैं।
3. सामा चकेवा	प्रत्येक वर्ष कार्तिक महीने के पुरे शुक्ल पक्ष में आयोजित किया जाता है।इसके पत्र मिट्टी द्वारा निर्मित होते हैं।
4. डोमकच	यह स्त्रियों के द्वारा मनोरंजन के लिए घरेलू लोक नाट्य हैं।
5. कीर्तनिया	इस भक्तिपूर्ण लोक नाट्य में भगवान कृष्णा की लीलाओं का वर्णन भक्ति गीतों के गायन के साथ श्रद्धापूर्व किया जाता हैं।

झारखण्डी साहित्य एवं साहित्यकार

झारखण्डी साहित्य को हम तीन भागों में बाँट कर समझने की कोशिश करेंगे —
जनजातीय , सदानी और हिंदी साहित्य —
जनजातीय भाषा
जनजातीय साहित्य में हम निम्न भाषा / बोली के बारे में पढ़ेंगे —

*1.*संथाली

- यह संथाल जनजाति की भाषा है।
- संथाली अपने भाषा को होड़ रोड़ कहते है।
- इनका अपना व्यकरण है।

- इनकी अपनी लिपि है जिसे **ओलचिकी** कहते है |इस लिपि का अविष्कार रघुनाथ मुर्मू द्वारा 1941 में किया गया |
- 92 वे संविधान संसोधन के द्वारा संथाली भाषा को 8 वीं अनुसूची में स्थान दिया गया |

संथाली भाषा के प्रमुख रचनाकार है –

- **जे फिलिप्स ,इ जी मन्न ,पकसुले, कैम्पबेल , मैकफेल , डोमन साहू समीर , केवल सोरेन |**

2.मुण्डारी

- मुण्डा जनजाति की भाषा का नाम मुण्डारी है | मुण्डारी भाषा के चार रूप मिलते है |
- **हसद मुण्डारी , तमड़िया मुण्डारी , केर मुण्डारी , नगुरी मुण्डारी |**

मुण्डारी साहित्य के प्रमुख रचनाकार

- **जे सी व्हिटली , ए नॉट्रोट , एस जे डी स्मेट , फादर हॉफमैन , एस सी रॉय , W J आर्चर ,पी के मित्रा |**

हो :

- हो जनजाति की भाषा का नाम 'हो' ही है |इस भाषा की अपनी शब्दावली एवं उच्चारण पद्धति है |

'हो' साहित्य के प्रमुख रचनाकार

- **भीमराव सुलंकी , सी एच बोम्बास , बोस , लियोनल बरो ,w g आर्चर,**

कुडुख /उरांव

- उरांव जनजाति की भाषा का नाम कुडुख या उरांव है |इस भाषा का लोक साहित्य बहुत संपन्न है |

प्रमुख रचनाकार

- **ओ फ्लैक्स , फड्रिनेंड होन ,ए ग्रीनर्ड |**

खड़िया

- खड़िया जनजाति की भाषा का नाम खड़िया है |
- इसकी लिखित साहित्य विकासशील अवस्था में है |

प्रमुख रचनाकार

- **गगन चंद्र बनर्जी ,एस सी रॉय ,एच फ्लोर ,w C आर्चर**

सदानी भाषा

खोरठा

- इसका सम्बन्ध प्राचीन खरोष्ठी लिपि से जोड़ा जाता है |
- **इसके अन्तर्गत रामगढ़िया ,देसवाली ,गोलवारी , खटहि आदि बोलियां आती है |**
- राजा – रजवाड़ो , राजकुमार- राजकुमारियां आदि की कथाएं खोरठा भाषा में मिलती है |

प्रमुख रचनाकार

- **भुनेश्वर दत्त शर्मा ,श्री निवास पानुरी आदि |**

पंचपरगनिया

- पंचपरगना क्षेत्र की प्रचलित भाषा है जिसके अन्तर्गत तमाड़ , बुंडू ,राहे, सोनाहातू एवं सिल्ली आते है |

प्रमुख रचनाकार

- **विनोदिया कवी , विनोद सिंह , गोरंगिया , सोबरन कवि , बरजू राम**

कुरमाली या करमाली

- मूलतः कुर्मी जाती की भाषा है |
- इस लोक साहित्य समृद्ध है |
- इसका लिखित साहित्य बहुत कम है |

रचनाकार

- **जगराम, बुध्धु महतो ,निरंजन महतो**

नागपुरी

- यह भाषा सदरी गँवारी के नाम से भी जानी जाती है |
- यह संपर्क भाषा के रूप में पुरे झारखण्ड में प्रचलित है |
- यह नागवंशी राजाओं की मातृभाषा है |
- इसका अपना लिखित साहित्य है |

प्रमुख रचनाकार

- **व्हिटली , कोनराड , बुकाउट ,हेनरिक फ्लोर ,रघुनाथ नृपति , महाकवि घासीराम ,हुलास राम ,कंचन आदि**